न्यूनतम सांझी समझ

❑ रोहित धनकर

पिछली बार हमने शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय संस्थाओं के सांझे प्रयासों के लिए एक प्रस्ताव रखा था । इसमें यह भी कहा गया था कि सांझा कार्यवाही का आधार एक पारस्परिक न्यूनतम सांझी सैद्धांतिक समझ हो सकती है । हमें लगा कि इस सांझी समझ पर भी कुछ चर्चा करनी चाहिये। इस प्रस्ताव पर हम 'शिक्षा विमर्श' में खुला संवाद आमंत्रित करते हैं। हमें लगता है किशिक्षा में बेहतर विकल्प की तलाश करने वाले सभी लोग सामाजिक बदलाव की आवश्यकता अनुभव करते हैं एवं उसी से प्रेरित भी होते हैं । हमारा यह भी मानना है कि मूलत: कोई भी शैक्षिक उपक्रम अधिक न्यायपूर्ण समाज की रचना की दिशा में ही देखा जाता है । इसका आशय यह है कि इस तरह का काम करने वाले लोगों का समाज एवं शिक्षा को लेकर एक सैद्धांतिक आधार तो है तथा उसमें यथेष्ठ उभय बिन्दु भी हैं । इन्हीं उभय बिन्दुओं को एकत्रित कर देने से सांझी समझ बन सकती है। अत: वास्तव में यह सांझी समझ बनाने का नहीं उसकी स्वीकार्य अभिव्यक्ति का सवाल अधिक है । अत: मूल सैद्धांतिक ढांचे की आधिकारिक अभिव्यक्ति तो नेटवर्क में शामिल संस्थाओं के लोग साथ बैठकर, गंभीर विमर्श के बाद ही कर सकते हैं । यहां तो हम उस विमर्श के लिए कुछ प्रस्थान बिन्दु ही सुझा सकते हैं ।

शिक्षा के उद्देश्य

❑ व्यक्ति में निर्णय की विवेकपूर्ण स्वायत्तता एवं कर्म के स्वावलम्बन का विकास करना।

- विवेकपूर्ण स्वायत्तता के लिए समझ का विकास एवं समालोचनात्मक चिंतन का विकास आवश्यक है ।
- विवेकपूर्ण स्वायत्तता का आशय आत्मकेन्द्रित स्वार्थपूर्ण चिंतन नहीं अन्य सभी की स्वायत्तता का स्वीकार है।
- इसके लिए संवेदनशीलता एवं नैतिक विकास आवश्यक है ।
- कर्म का स्वावलंबन भी समझ एवं समालोचनात्मक चिंतन की तरह स्वायत्तता की आवश्यक शर्त है ।
- कर्म का स्वाबलंबन कौशलों के विकास की मांग करता है ।
- कौशलों का विकास पदार्थ संबंधी ज्ञान, कल्पनाशीलता, समस्या समाधान एवं शारीरिक दक्षताओं पर निर्भर करता है ।

हम किन बच्चों की शिक्षा की बात कर रहे हैं ?

❑ जिस तरह की शिक्षा की हम बात कर रहे हैं वह भारत के प्रत्येक बच्चे का अधिकार है ।

❑ जनतांत्रिक समाज के लिए उपयुक्त एवं आवश्यक शिक्षा भेदभाव के साथ नहीं मिल सकती । अत: शैक्षिक कार्यक्रमों के उद्देश्य समान होने आवश्यक हैं ।

- सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं उनके लिए संसाधनों का प्रावधान समान होना भी जनतांत्रिक समाज के लिए शिक्षा की आवश्यक तार्किक निष्पत्ति है ।

शिक्षाक्रम

- विवेकपूर्ण स्वतंत्रता के लिए समझ एवं समालोचनात्मक चिंतन का विकास आवश्यक है।
    - समझ में ज्ञान, सूचना एवं सौंदर्य बोध के पक्ष समाहित हैं ।
    - इसके लिए संवेदनात्मक एवं नैतिक विकास भी आवश्यक है।
    - संवेदनात्मक एवं नैतिक विकास को समझ के विकास का हिस्सा भी माना जा सकता है पर इस पर यथेष्ठ बल देने के लिए यहां पृथक जिक्र किया है ।
    - विवेक पूर्ण स्वायत्तता के लिए कर्म में स्वावलंबन भी आवश्यक है ।
    - कर्म के लिए समझ एवं समझ के बिना कर्म की कुशलता का विकास संभव नहीं है।
    - कर्म का स्वावलंबन कौशलों के विकास की मांग करता है ।
    - कौशलों का विकास पदार्थ संबंधी ज्ञान, कल्पनाशीलता, समस्या समाधान एवं शारीरिक दक्षताओं पर निर्भर करता है।
- अविवेचित ज्ञान का तैयार उत्पाद के रूप में हस्तांतरण, समालोचनात्मक चिंतन के विकास में बाधा हो सकता है।
    - नैतिक मूल्यों का अंतिम सत्य के रूप में रूढ़ प्रस्थापन समालोचनात्मक चिंतन को समाप्त कर देता है ।
    - अत: समझ एवं नैतिक मूल्यों का विकास समालोचनात्मक चिंतन के साथ साथ होना आवश्यक है।
    - कर्म कौशलों के विकास में अधिकतम खुलापन एवं व्यापकता स्वावलंबन में मददगार होगी ।
- समझ (ज्ञान, सूचना, बौद्धिक दक्षतायें) एवं कौशलों का विकास अपने अनुभवों का विश्लेषण एवं उन्हें व्यवस्थित करने से ही होता है ।
    - बच्चे के अनुभव अपने परिवेश से अंत:क्रिया करते हुए एवं समस्याओं को हल करने के प्रयत्नों में ही विश्लेषित एवं व्यवस्थित होते हैं।
    - स्थानीय अनुभव के विश्लेषण एवं व्यवस्थापन में अवधाणाओं का सामान्यीकरण होता है जो धीरे-धीरे स्थान-निरपेक्ष होकर सार्वभौम उपयोग की तरफ बढ़ता है ।
    - अत: शिक्षाक्रम का आरंभ अब और यहां से ही हो सकता है पर उसकी दिशा सार्वभौम ही होनी चाहिये ।
- समझ एवं कौशलों के विकास में तार्किक क्रम हो सकता है ।
    - समझ एवं कौशलों के विकास में मनोवैज्ञानिक क्रम भी हो सकता है ।
    - शिक्षाक्रम के बहुत से क्षेत्रों में यह क्रम बहुत दृढ़ एवं बाध्यकारी न हो ऐसा संभव है ।
    - अत: क्रम पर उतना ही बल दिया जाना चाहिये जो तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक कारणों से आवश्यक है । उससे अधिक बल शिक्षाक्रम को जड़ बना सकता है।
- शिक्षाक्रम में समावेश के लिए चीजों (अवधारणाओं, सूचनाओं, क्षमताओं, दक्षताओं, रूझानों, मूल्यों, कौशलों आदि) का चुनाव उपरोक्त बिन्दुओं से संगत रहना चाहिये ।
    - शिक्षाक्रम में समाविष्ट चीजों की क्रम व्यवस्था भी उपरोक्त सिद्धांतों से संगत होनी चाहिये ।

शिक्षण विधि

- शिक्षण विधियां सीखने के मनोविज्ञान से सम्मत होनी चाहियें।
- वे स्वायत्तता एवं समालोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने वाली होनी चाहियें ।
- वे बच्चे की स्वतंत्रता व मानवीय गरिमा का सम्मान करने वाली होनी चाहियें ।
- प्रताड़ना, भय, लालच एवं बल प्रयोग पर आधारित नहीं होनी चाहियें ।
- लोकतंत्र के लिए उपयुक्त शिक्षा के लिए आवश्यक है कि वह एक लोकतांत्रिक माहौल में ही सम्पन्न हो। अत: विद्यालय का माहौल लोकतांत्रिक मूल्यों का संवर्धन करने वाला होना चाहिये ।

शिक्षा के लिए उत्तरदायित्व

- लोकतंत्र का विचार मानवीय गरिमा, समता, उनके लिए प्रतिबद्धता, सत्ता तथा संसाधनों के न्यायपूर्ण बंटवारे एवं समुचित उपयोग के विचारों पर आधारित है ।
- समाज में इन मूल्यों की व्यापक स्वीकृति व्यवस्थाओं (सरकार आदि) को लोकतांत्रिक बनाती है।
- अत: राज्य का अपने आप को लोकतांत्रिक घोषित करना समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों की व्यापकता एवं उनके लिए प्रतिबद्धता पर निर्भर करता है।
- जो राज्य अपने आप को लोकतांत्रिक घोषित करता है उसकी तार्किक जिम्मेदारी है कि प्रत्येक नागरिक की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भागीदारी सुनिश्चित करे ।
- लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भागीदारी निर्णय की स्वायत्तता एवं कर्म के स्वावलंबन की मांग करती है ।
- मानव स्वायत्तता एवं कर्म के स्वावलंबन की क्षमता प्राप्त करने की संभावनाओं से युक्त पैदा होता है, पर ये क्षमतायें विकसित तो शिक्षा से ही होती हैं ।
- अत: लोकतंत्र के लिए उपयुक्त शिक्षा सबको मिले यह राज्य की जिम्मेदारी है ।
- राज्य सत्ता लोकतंत्र की तरफ लोक के दबाव में ही बढ़ती है ।
- अत: लोकतंत्र के लिए उपयुक्त शिक्षा की व्यवस्था भी लोक के दबाव में ही संभव है ।
- यदि शिक्षा को उपरोक्त उद्देश्यों के अनुरूप होना है तो उसकी व्यवस्था का भी लोकतांत्रिकरण आवश्यक है। अर्थात वह पूरी तरह राज्य कर्मचारियों के अधिकार में नहीं रह सकती ।
- परिणाम स्वरूप कह सकते हैं : शिक्षा के लिए संसाधनों की व्यवस्था करना राज्य का काम है । शिक्षा का स्वरूप, गुणवत्ता एवं क्रियान्विति के तरीके समाज के अधिकार क्षेत्र में रहने चाहियें। राज्य इसमें सहयोग से इनकार नहीं कर सकता ।

संक्षेप में :

लोकतंत्र के लिए शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था का लोकतांत्रिकरण । ◆